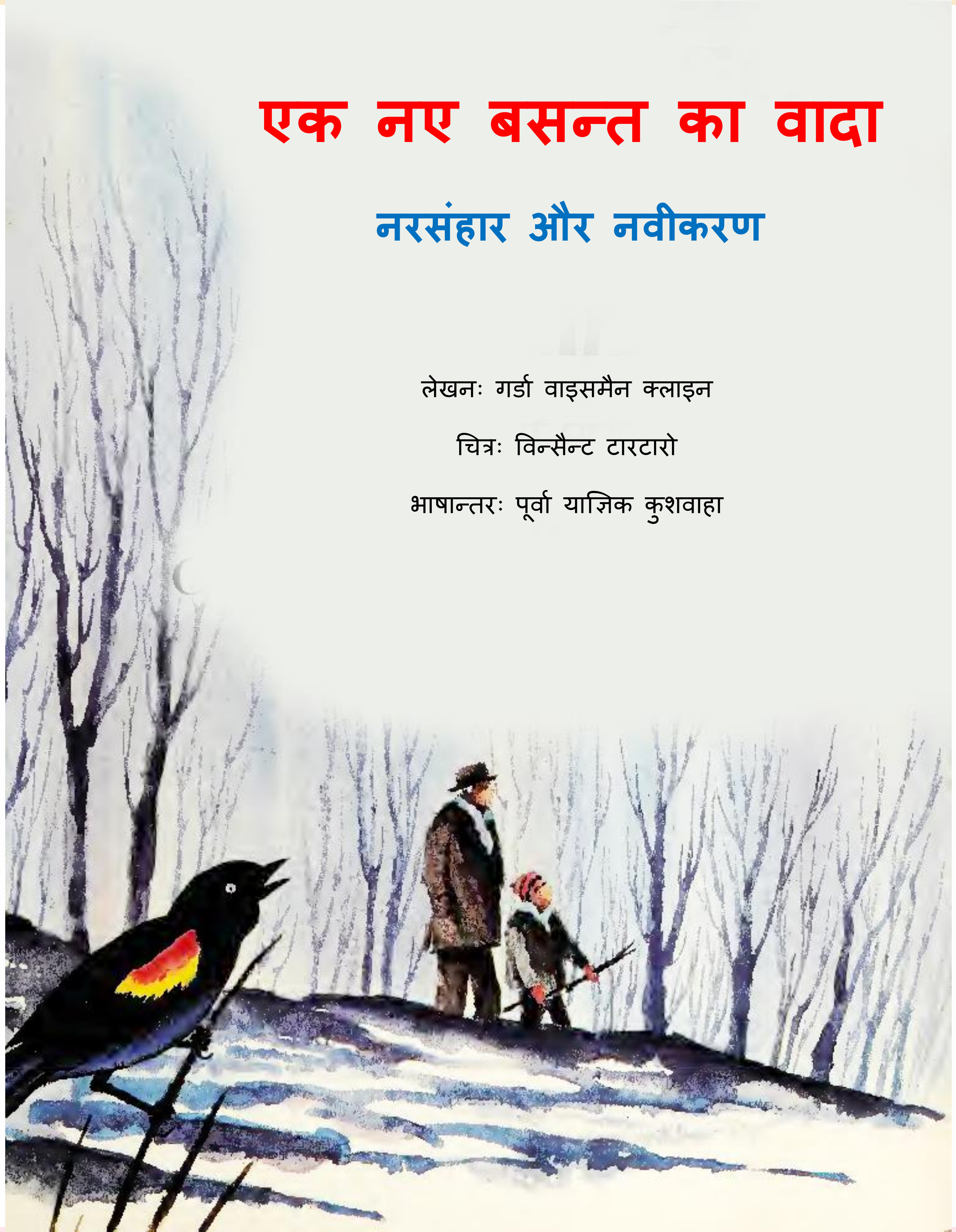
एक नए बसन्त का वादा

नरसंहार और नवीकरण

लेखनः गर्डा वाइसमैन क्लाइन

चित्रः विन्सैन्ट टारटारो

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



एक नए बसन्त का वादा

नरसंहार और नवीकरण

लेखनः गर्डा वाइसमैन क्लाइन

चित्रः विन्सैन्ट टारटारो

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

यह किताब

अलिसा, जूली, एन्ड्रू व मैलिसा,

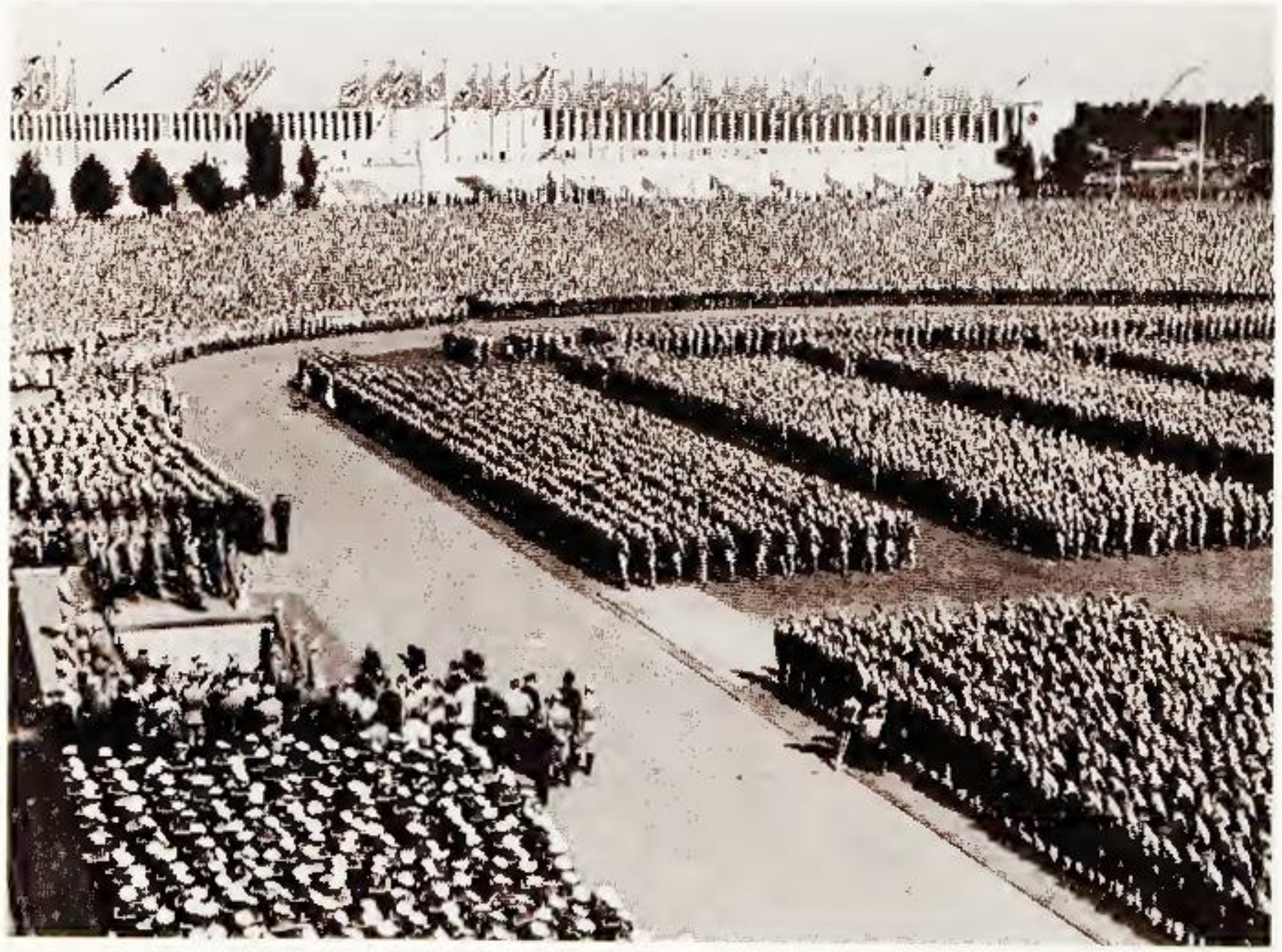
तथा नए बसन्त के सभी वारिसों को,

समर्पित है।

जी. डब्ल्यू. के.



बहुत समय पहले
पर फिर भी लोगों की याद्दाश्त की जद में,
एक भरी त्रासदी घटी, नरसंहार।
नरसंहार का मतलब है आग से विनाश और जानों को गंवाना।



एक निर्दय व्यक्ति, हिटलर
और उसके अनुयायी नात्ज़ी,
सत्ता में आए।
उन्होंने उल्टे स्वास्तिक को अपना प्रतीक चुना,
और देश के बाद देश पर काबिज़ होते गए।
नात्ज़ी दुनिया के आज़ाद लोगों को अपना गुलाम बनाना चाहते थे।



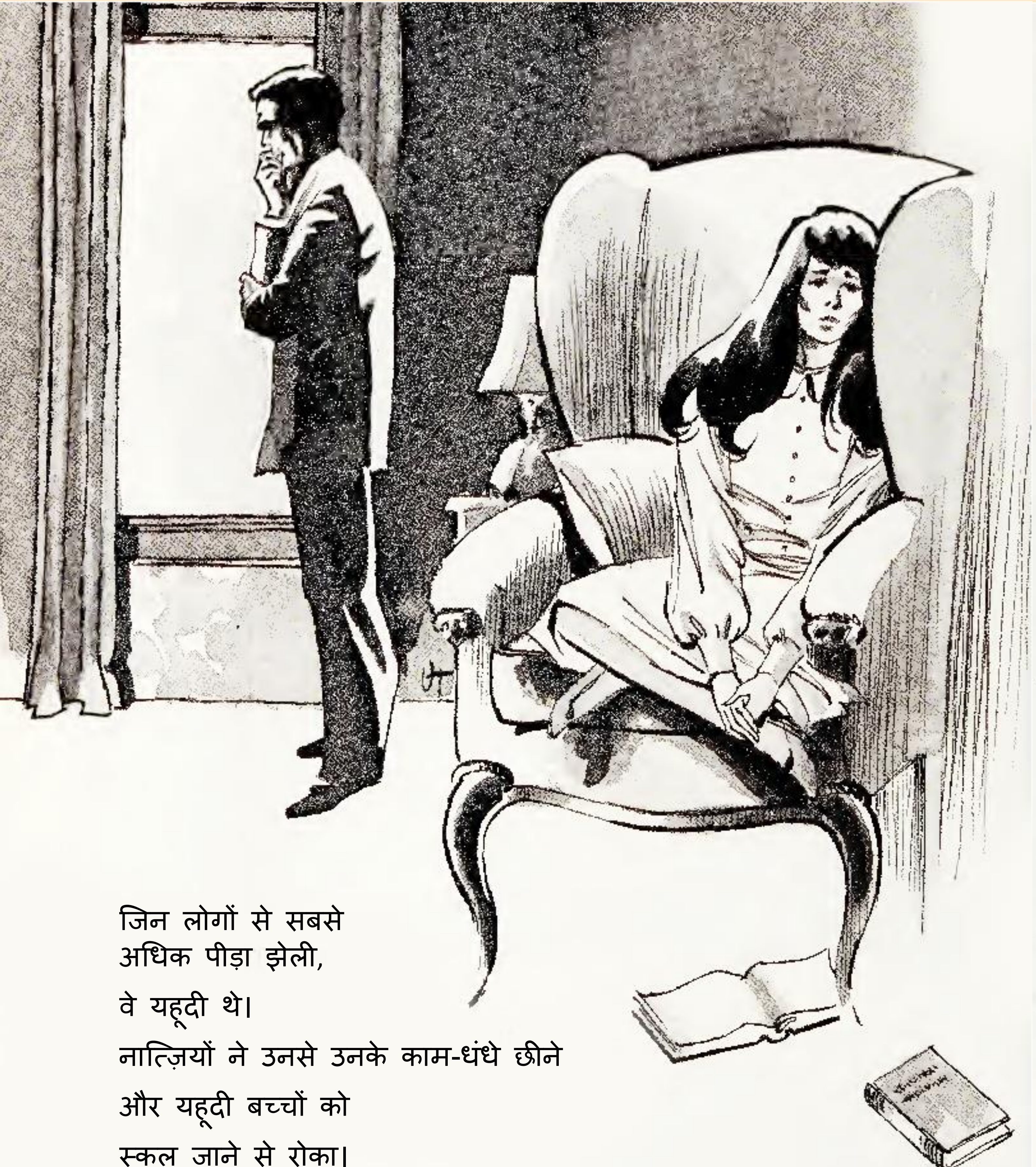
हर जगह के भले लोग नात्ज़ियों के ख़िलाफ़ लड़े।
छह लम्बे सालों तक लड़ते रहे।
कभी तो लगता था कि जीत नात्ज़ियों की ही होगी।



आख़िरकार जंग खत्म हुई, नात्ज़ी हारे।
युरोप के देश आज़ाद हुए,
आतंक और गुलामी से आज़ाद हुए।



पर नात्ज़ियों ने अपने नृशंस निशान छोड़े,
शहर के शहर तबाह कर दिए गए थे,
लोगों ने अपने प्रियजन खो दिए।



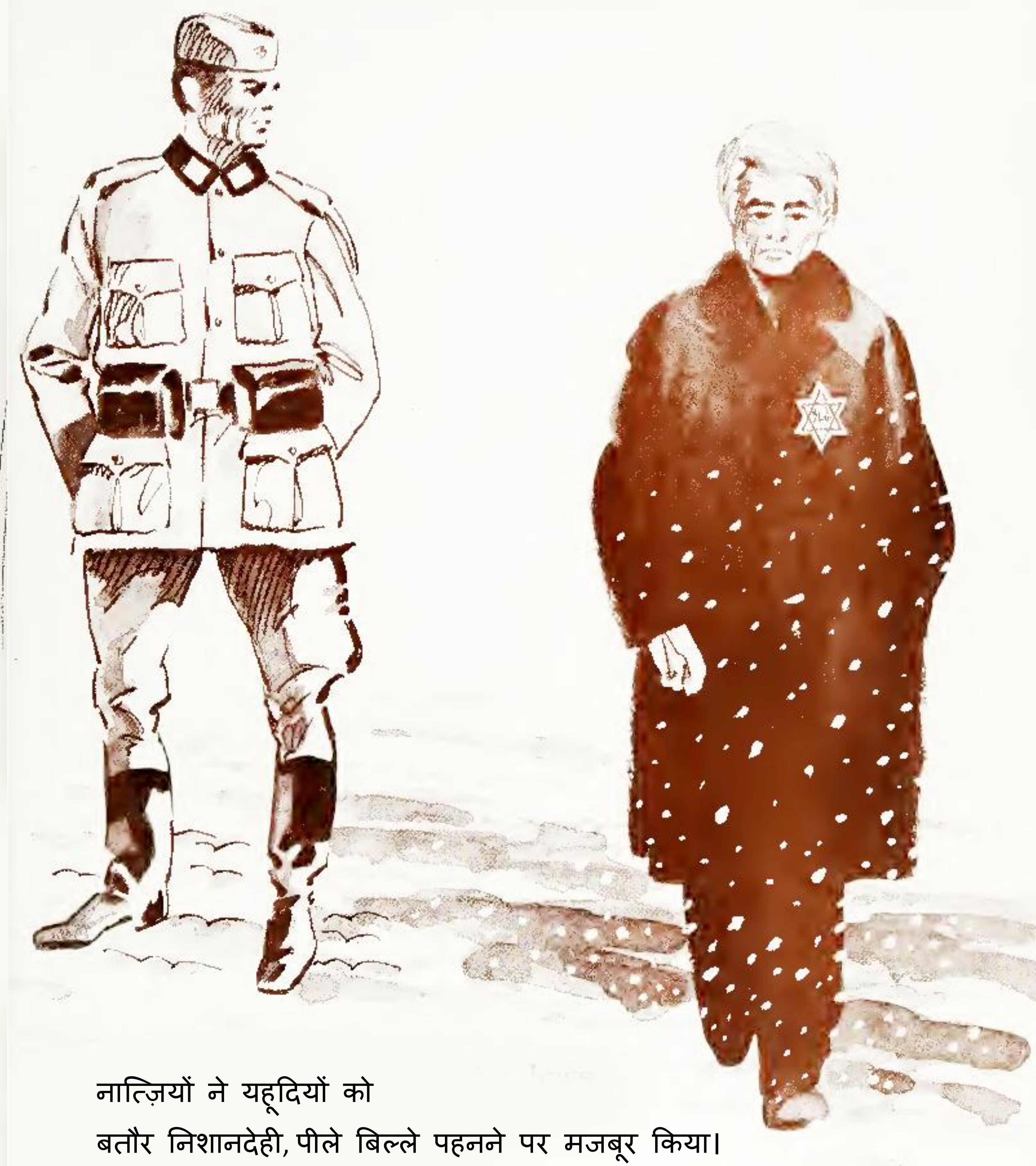
जिन लोगों से सबसे
अधिक पीड़ा झेली,

वे यहूदी थे।

नात्ज़ियों ने उनसे उनके काम-धंधे छीने

और यहूदी बच्चों को

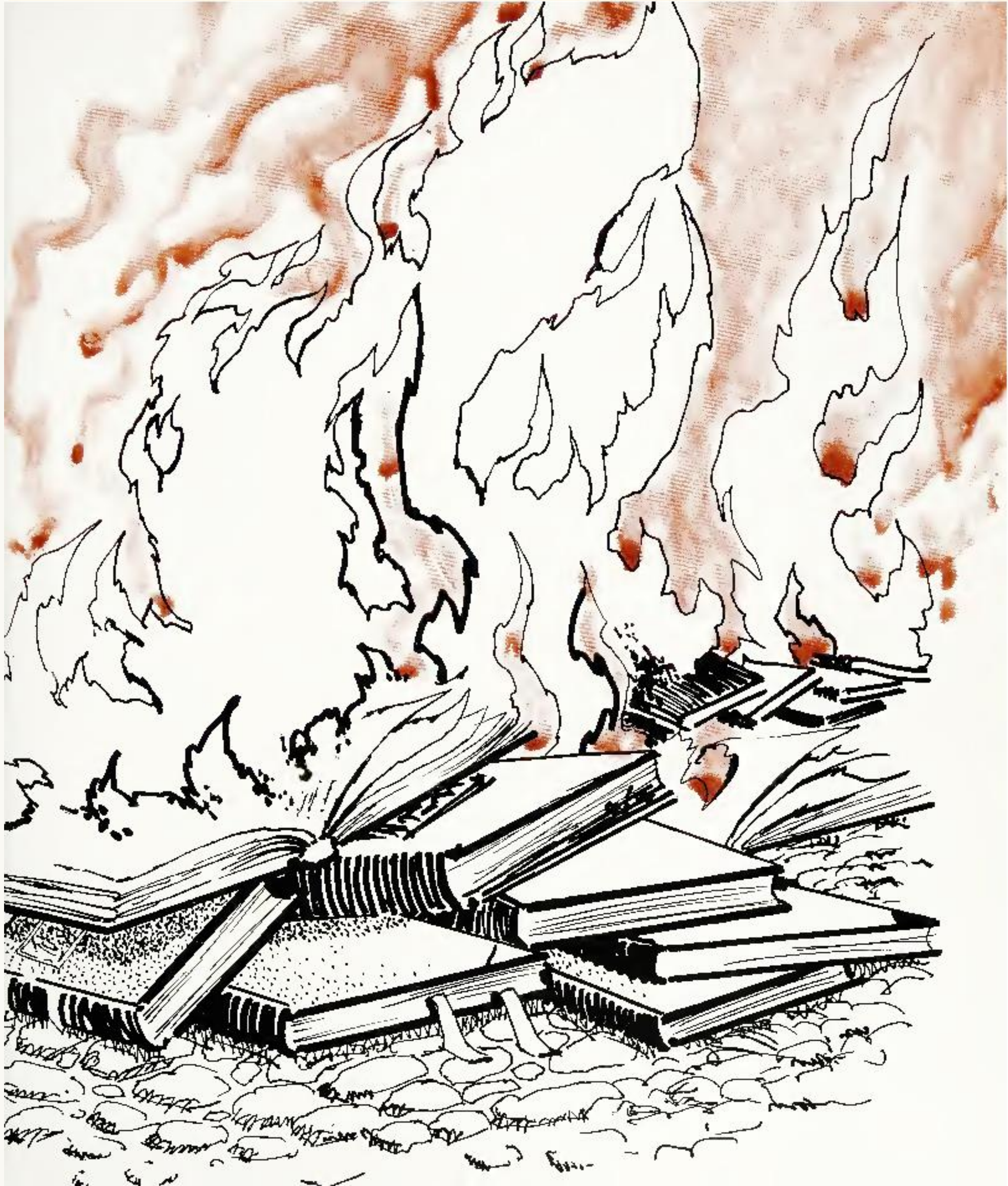
स्कूल जाने से रोका।

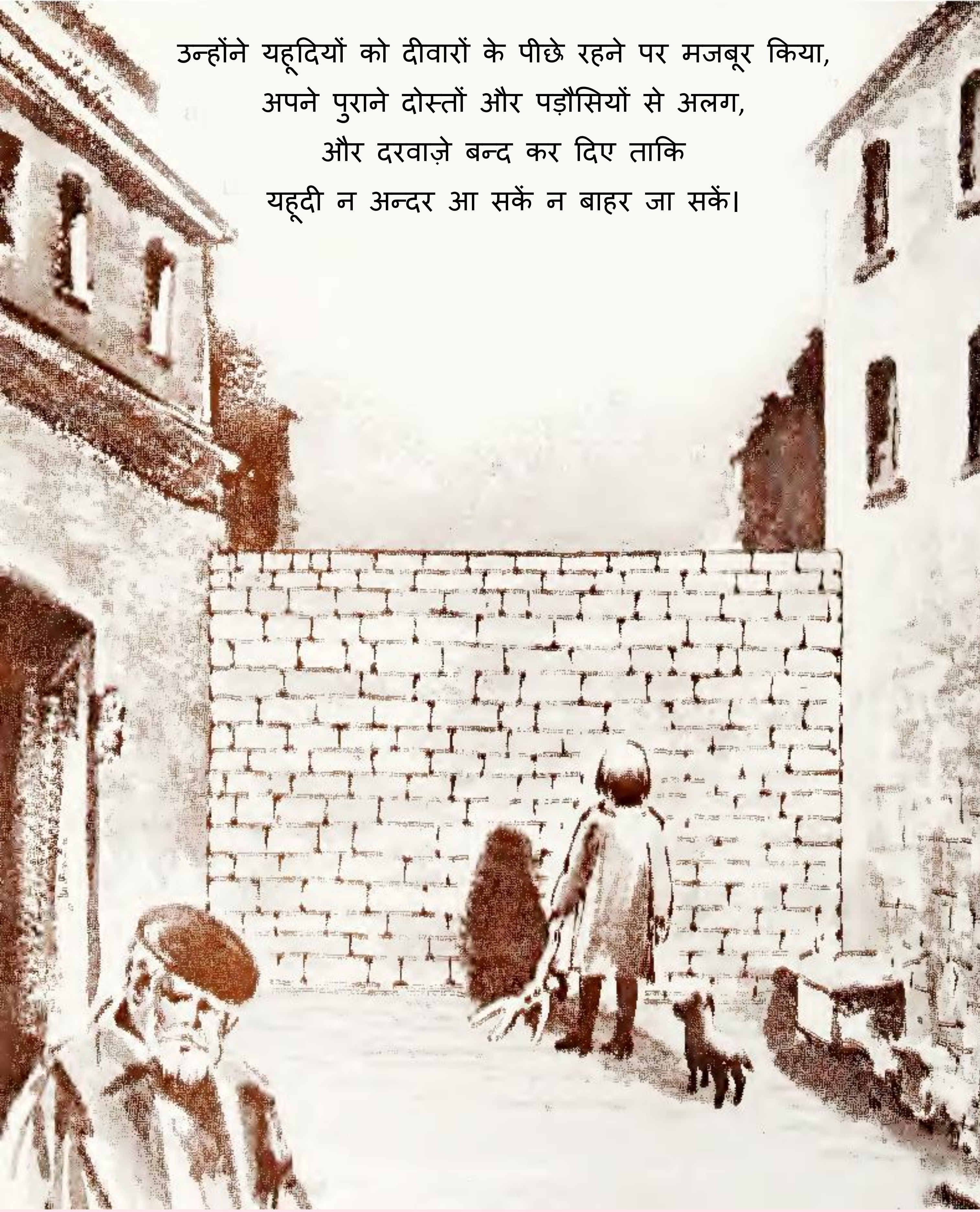


नात्ज़ियों ने यहूदियों को

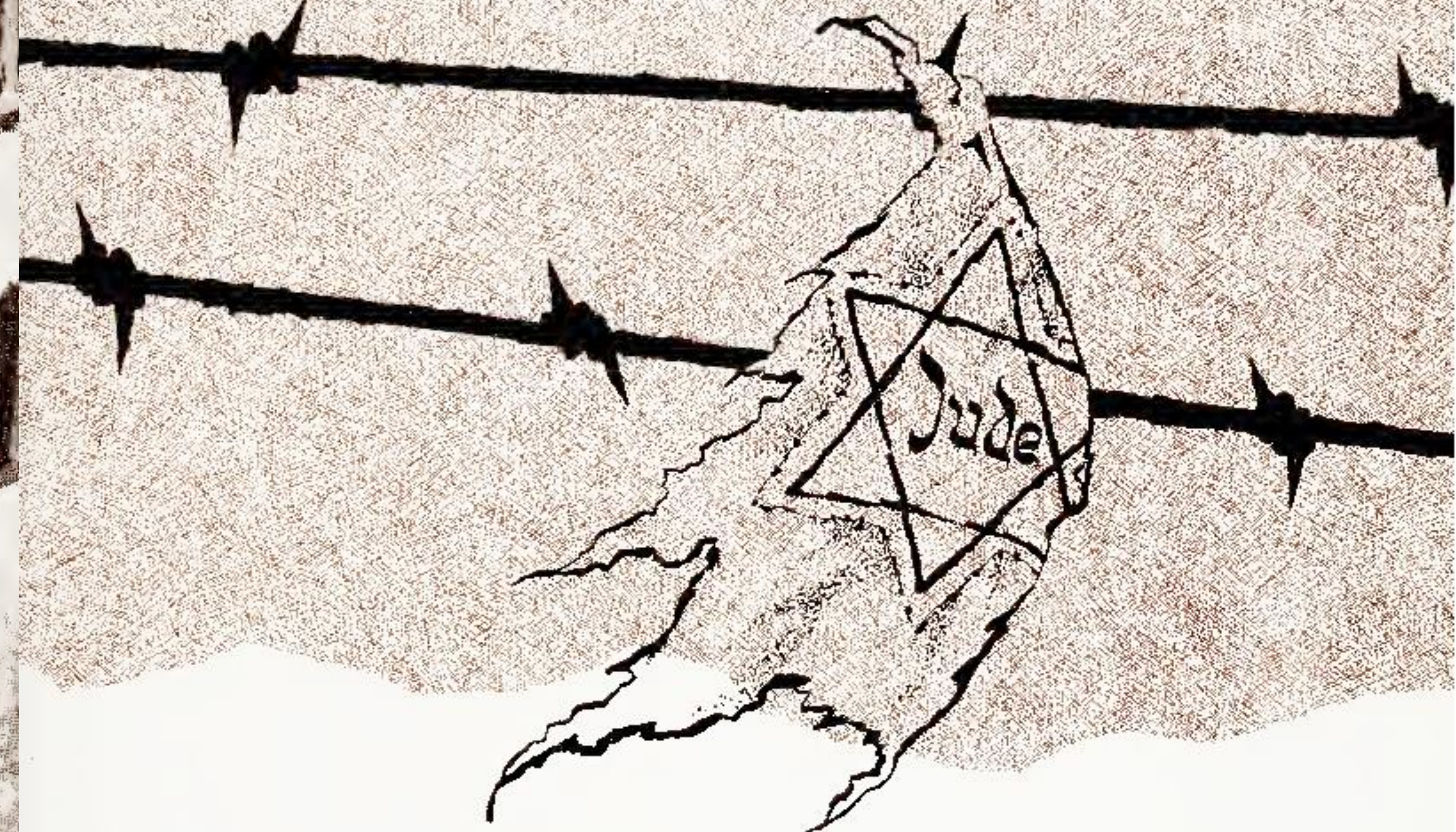
बतौर निशानदेही, पीले बिल्ले पहनने पर मजबूर किया।

नात्ज़ियों ने तय किया कि वे हरेक यहूदी को मौत के घाट उतारेंगे,
बच्चों से बूढ़ों तक को।
और यहूदियों की हरेक स्मृति को नष्ट कर देंगे।
उन्होंने यहूदियों की किताबें जलाईं।
किताबें भी याद रखने का ज़रिया होती हैं,
पर नात्ज़ी चाहते थे कि दुनिया यहूदियों को ही भूल जाए।





उन्होंने यहूदियों को दीवारों के पीछे रहने पर मजबूर किया,
अपने पुराने दोस्तों और पड़ौसियों से अलग,
और दरवाज़े बन्द कर दिए ताकि
यहूदी न अन्दर आ सकें न बाहर जा सकें।



कई यहूदियों की शहरों और गाँवों में हत्या कर दी गई।
पर नात्ज़ियों को उन्हें एक खास जगह भेजना पसन्द था,
जो यातना शिविर कहलाते थे।
यातना शिविरों की कंटीली बाड़ों के पीछे,
नात्ज़ियों ने यहूदियों का कत्ल किया।
नात्ज़ियों द्वारा यहूदियों का यह कत्लेआम नरसंहार कहलाता है।
नरसंहार इन्सानों के लिए उतना ही भयानक था जितनी जंगल की
आग प्रकृति के लिए होती है।

कल्पना करो कि यह दुनिया एक जंगल है, जिसमें पेड़-पौधे और फूल हैं,
जंगल जिसमें किस्म-किस्म के जीव-जन्तु भरे हैं।
जैसे हमारी दुनिया है।
और वहाँ आते-जाते मौसम जीवन की व्यवस्था हैं।



बसन्त में जीवन पैदा होता है। पेड़ों पर नए पत्ते उगते हैं,
घोंसलों में रखे अंडों से परिन्दों के बच्चे निकलते हैं।
भालू के नन्हे शावक दुनिया को हैरत भरी नज़रों से ताकते हैं।
वेग से बहती नदियों के किनारे बनफ़शा के फूल खिलते हैं,
और नए बसन्त में अपनी खुशबू बिखेरते हैं।





तब गर्मी का मौसम आता है। टहनियों पर पत्तों का रंग गहराता है।
पेड़ गझिन और हरे होते हैं
छोटे परिन्दे उड़ना सीख चुके होते हैं।
और हिरण के शावकों के पैर अब डगमगाते नहीं,
वे जंगल में दौड़ लगाते हैं, ताकि नदियों का पानी तलाश सकें।





इसके बाद आता है पतझड़।

जंगल में मिलती हैं ढेरों बेरियाँ और कुकुरमुत्ते, फल और मेवे।

गिलहरियाँ बलूत के शंकु और अखरोट जमा करती हैं,

और उन्हें पेड़ों के कोटरों में छिपाती हैं,

ताकि सर्दियों में उनके पास खाना रहे।

परिन्दों के घोंसले अब खाली हो जाते हैं,

नन्हे परिन्दे उड़ जो चुके होते हैं।



तब आख़िरकार बर्फ गिरने लगती है।
हौले-हौले काले बादलों से,
करोड़ों हिम बून्दें, लेसदार सितारों की तरह
गुपचुप नीचे उतरती हैं।
एक मोटा मुलायम कम्बल बना,
सोते जंगल को कोमलता से ढ़क देती हैं।







पर सर्दी मौत नहीं होती।

यह तो एक लम्बी, गहरी, तरोताज़ा करने वाली नींद होती है।

मानों प्रकृति कह रही होः ''शश्श्श! सो जाओ,

आने वाले बसन्त के लिए अपनी ताकत जुटाओ।''

जैसे तुम्हें रात को सोने की ज़रूरत होती है, ताकि नए दिन के लिए
तरोताज़ा हो जागो, ठीक उसी तरह सर्दियों की भी ज़रूरत होती है
ताकि बसन्त फिर से जन्म ले सके।



फूल दरअसल मरे नहीं थे -
केवल एक गर्मी के फूल मुरझाए थे,
केवल एक ही पीढ़ी के फूल खत्म हुए थे।
अपने गुच्छों से, अपनी जड़ों से, अपने बीजों से
ठीक वैसे ही फूल उगेंगे, जो चले गए थे,
वे बसन्त के आने पर फिर से खिलेंगे।
पेड़ की शाखाओं पर बने घोंसले में
परिन्दों की एक नई पीढ़ी चहकेगी,
और अपनी भांति-भांति की आवाज़ों में गाएगी।
तितलियों के अंडे, जो सर्दियों में सुरक्षित रखे गए थे,
धूप के बढ़ने और गरमाहट के लौटने के साथ फूटंगे।



यही जीवन का चक्र है।
कभी खत्म न होने वाली जीवन की श्रृंखला है,
जो ठीक पहले-सी चलती चली जाती है!

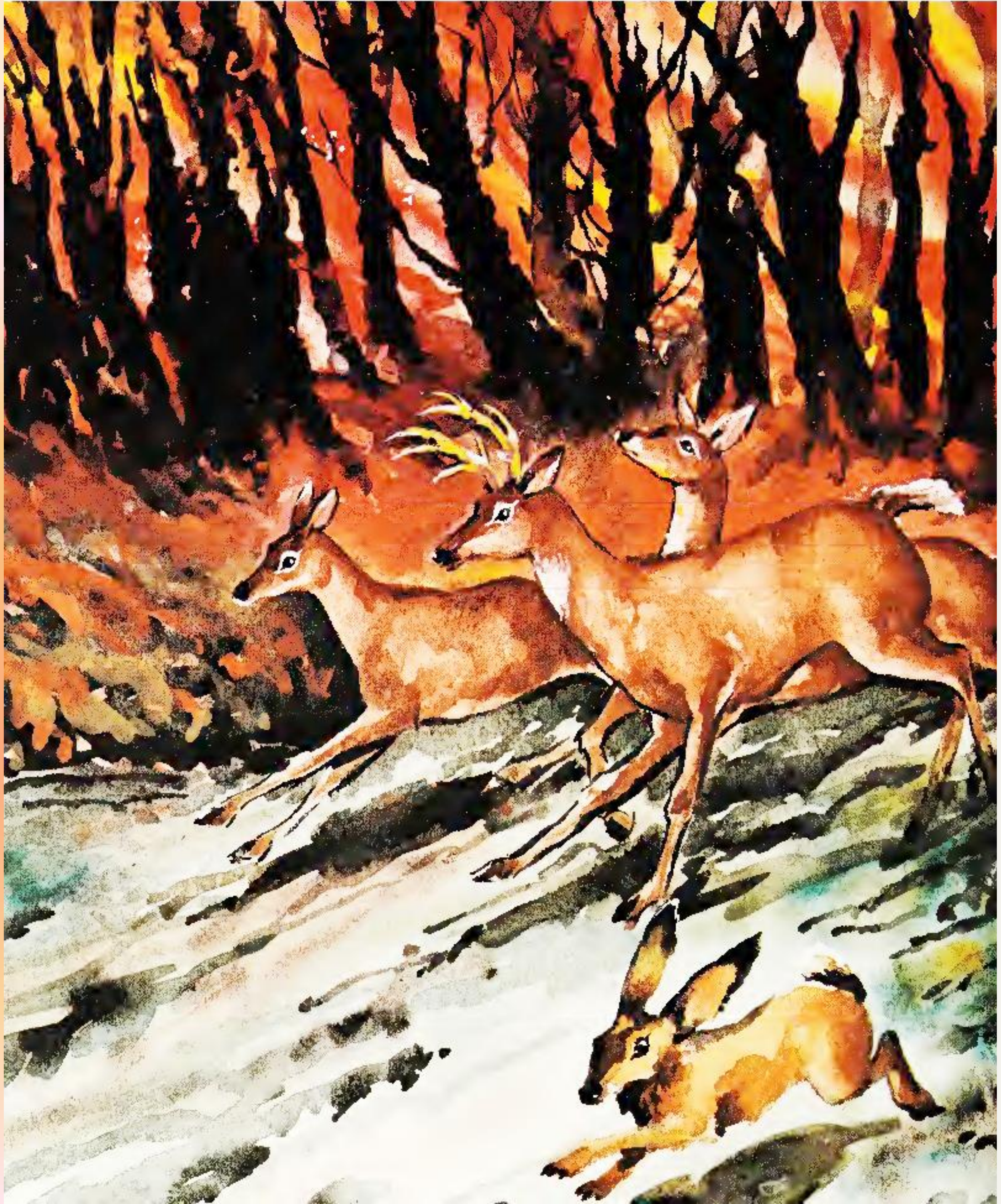




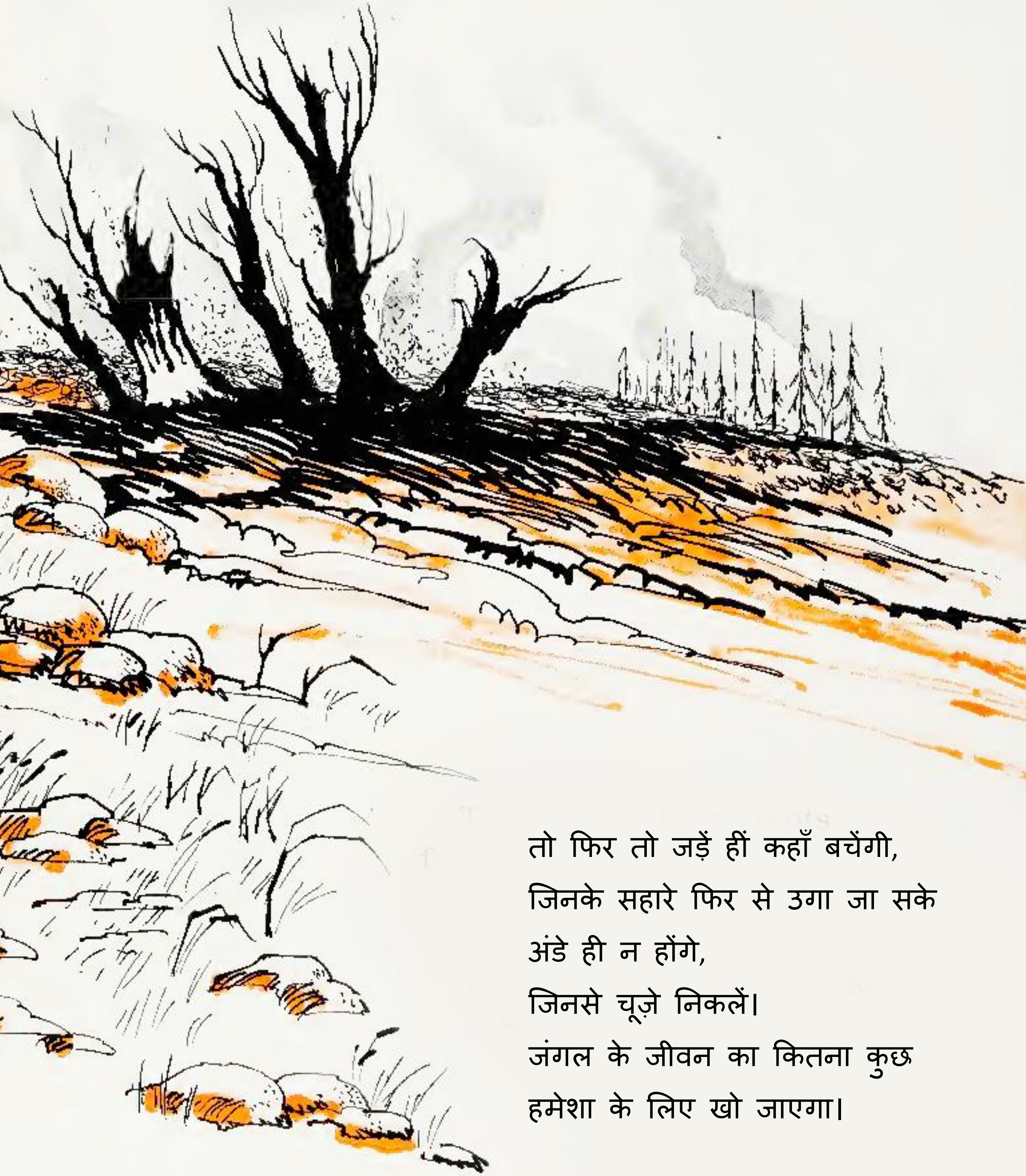
पर अगर कोई शैतानी हाथ
जंगल को आग लगाने की धार लें,
किसी बसन्त या गर्मी में
यह तय कर लें कि उस मौसम के समूचे जीवन को नष्ट कर डालना है, तो?



छोटी गिलहरियाँ दुनिया को झांक कर देख रही हैं,
जिनके अंडे अभी फूटे नहीं हैं।
फूल जो बस अब खिलना शुरू कर रहे हों,
जुगनू जिन्हें चमकने का मौका ही न मिला हो।
और वह विशाल शाहबलूत का पेड़ भी -
जो इतना लम्बा, इतना मज़बूत और इतना बूढ़ा है।



वे सभी, छोटे और बूढ़े
सुन्दर और साधारण,
चतुर और सरल,
सब जल जाएंगे, नष्ट हो जाएंगे, बेमौसम मारे जाएंगे,
जीवन की सामान्य व्यवस्था से अलग।



तो फिर तो जड़ें हीं कहाँ बचेंगी,
जिनके सहारे फिर से उगा जा सके
अंडे ही न होंगे,
जिनसे चूज़े निकलें।
जंगल के जीवन का कितना कुछ
हमेशा के लिए खो जाएगा।

ठीक ऐसा ही हुआ
नरसंहार के वक्त।
केवल कुछ ही थे जो बच पाए।



केवल थोड़े से लोग,
उन्हें उत्तरजीवी कहा गया।

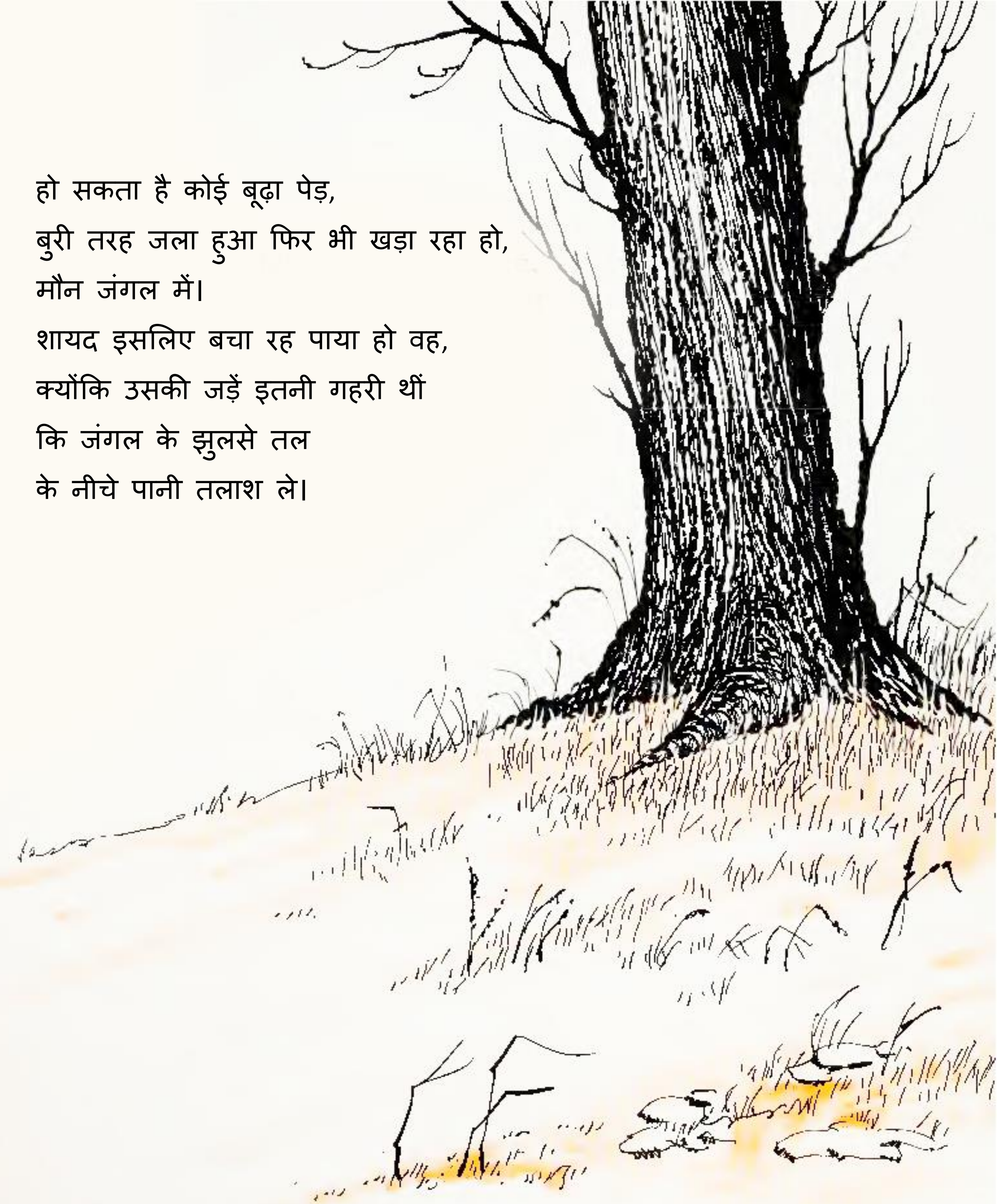




जैसा जंगल की आग में होता है,
कुछ परिन्दें जिनके पंख
गरम ताप और लपटों में झुलस चुके थे
आज़ादी की ओर उड़ पाए होंगे।



हो सकता है कोई बूढ़ा पेड़,
बुरी तरह जला हुआ फिर भी खड़ा रहा हो,
मौन जंगल में।
शायद इसलिए बचा रह पाया हो वह,
क्योंकि उसकी जड़ें इतनी गहरी थीं
कि जंगल के झुलसे तल
के नीचे पानी तलाश ले।



हो सकता है वह फिर से जी जाए,
कम से कम अपनी एक शाखा में
नई कोंपल उगा ले।





हो सकता है कुछ हिरण,
समय रहते जंगल से निकल भागे हों, और बच गए हों।
शायद कुछ खरगोश ज़मीन के नीचे,
किसी गड्ढे में बच गए हों,
जो दरअसल अपने भरे-पूरे परिवार के अंतिम सदस्य हों।

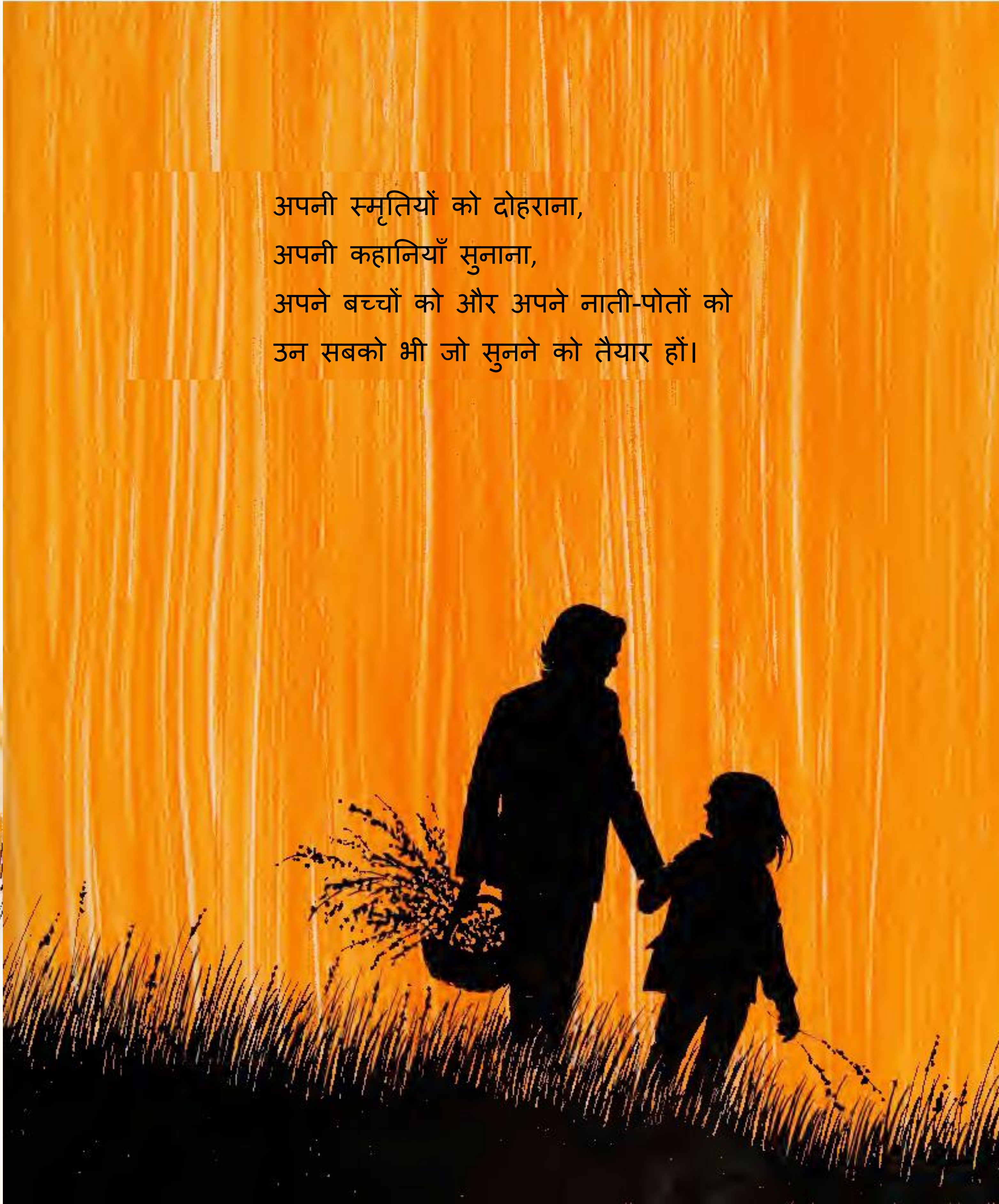


इसी तरह बचे रहे नरसंहार के कुछ उत्तरजीवी इन्सान।
अब उनके ज़िम्मे एक महत्वपूर्ण काम है।
एक नया जीवन गढ़ना।



यह याद रखना कि तब कैसी थी दुनिया,
उस दुष्ट ने विनाश किया उसके पहले।

अपनी स्मृतियों को दोहराना,
अपनी कहानियाँ सुनाना,
अपने बच्चों को और अपने नाती-पोतों को
उन सबको भी जो सुनने को तैयार हों।





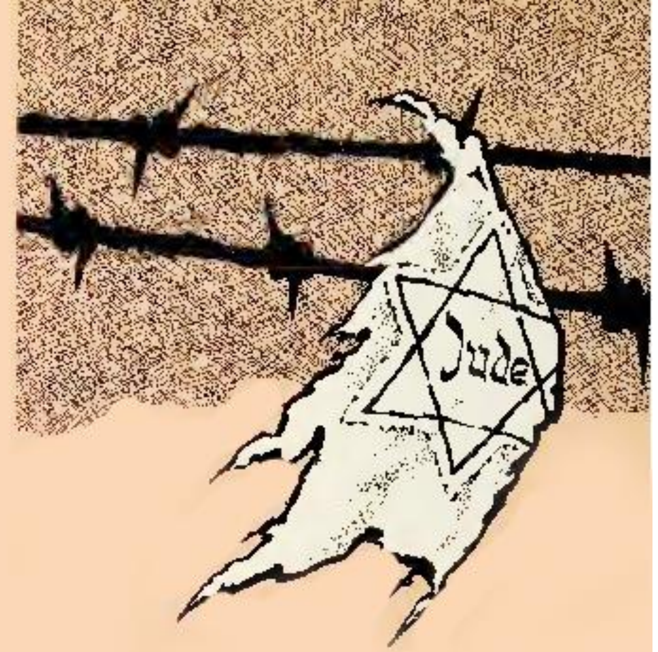
सुनो, ध्यान से सुनो,
उन्होंने जो देखा,
उन्होंने जो झेला, उस कहानी को।





क्योंकि तुम ही नया बसन्त हो,
दुनिया के इस जंगल में!

इस पुस्तक की लेखिका गर्डा वाइसमैन क्लाइन, स्वयं नरसंहार की उत्तरजीवी हैं। उनके परिवार को हरेक सदस्य और उनके अधिकांश मित्र यातना शिविरों में मौत के घाट उतारे गए। युद्ध समाप्ति पर गर्डा को साइलेशिया के एक महिला मज़दूर शिविर से अन्य बन्दियों के साथ पैदल कूच करने, यानी डैथ-मार्च, पर मजबूर किया गया। जहाँ से वे बचा ली गईं। आज वे यात्राएं करती हैं, युनाइटेड ज्यूइश अपील (यूजेए), बॉन्डस् फॉर इज़रायल, हदास्सा, कॉलेजों, हाई स्कूलों, बहु-धर्म आयोजनों में व्याख्यान देती हैं। वे *ऑल बट माय लाइफ* की भी लेखिका हैं, जो उनकी यातना और बच निकलने की कथा है। उनकी एक अन्य किताब का नाम है *ब्लू रोज़* एक विशेष बालिका की कहानी है जो सबसे अलग है, इसलिए नीले गुलाब के समान है जिसे सावधान देखभाल की ज़रूरत है, न कि त्याग देने की। श्रीमति क्लाइन *बफलो न्यूज़* के लिए एक साप्ताहिक स्तंभ लिखती हैं। उनको जिन सम्मानों से नवाज़ा गया है उनमें 'वुमन ऑफ द ईयर' पुरस्कार, दो मानद् डॉक्टरेट ऑफ ह्यूमेन लैटर्स और ह्युमैनिटेरियन साइटेशन फॉर द ईयर ऑफ द स्पैशल चाइल्ड, शामिल हैं। उनकी दो बेटियाँ, एक बेटा और चार नाती-पोते हैं। वे अपने पति के साथ बफलो के उपनगरीय इलाके में रहती हैं।


Jude